इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श

इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श यह है कि अपने आपको पहचाने कि मैं क्या हूँ. ईश्वर को पहचाने और उसमें अपनी हस्ती लय कर दे. जो इस आदर्श का रास्ता दिखलाये वही सच्चा आध्यात्म है. जिसने इस आदर्श की प्राप्ति कर ली है वही सच्चा गुरु है. जो इस आदर्श की प्राप्ति करना चाहता है वही सच्चा भक्त है. जब ऐसा शिष्य हो और ऐसा गुरु हो तभी सच्चे लक्ष्य की प्राप्ति मुमकिन है. दुनियाँ की किसी भी चीज़ की ख्वाहिश रखने वाला, चाहे वो कितनी भी अनमोल क्यों न हो, भक्त नहीं है. गुरु में कितनी ही विद्या क्यों न हो, कितना ही ज्ञान क्यों न हो, कितनी ही शक्ति क्यों न हो, अगर उसने अपने आप को ईश्वर को समर्पण नहीं किया है और ख़ुदी (अहंपना) बाकी है तो वह सच्चा गुरु नहीं है, ऐसा अधिकारी शिष्य हो और ऐसा पूर्ण गुरु मिल जाये, तभी ईश्वर के दर्शन होते हैं. लेकिन शर्त यह है कि शिष्य पूर्ण श्रद्धा के साथ गुरु के बताये हुए रास्ते पर चले और दुनियाँ की बड़ी से बड़ी चीज़ को त्यागने में न हिचकिचाए, बल्कि ख़ुशी से त्याग दे. ऐसा संयोग होने से सफलता प्राप्ति होती है और आदमी क़ामयाब होता है. जितनी देर ऐसी हालत हासिल करने में लगती है उतनी ही देर लक्ष्य प्राप्ति में होती है.

दूसरे, इस रास्ते में हिम्मत की बड़ी ज़रुरत होती है. कभी घबराएं नहीं. बराबर दुनियाँ से लड़ता रहे. दुनियाँ से लड़ना यह है कि दुनियाँ की ख्वाहिशात और धोखे से अपने को अलहदा रखे. परमार्थ और दुनियाँ का हमेशा से बैर रहा है. बिना दुनियाँ को फ़तह किये परमार्थ नहीं मिलता. इसलिए बराबर दुनियाँ से लड़ता रहे और ईश्वर की कृपा और अपनी कामयाबी का पूरा यक़ीन रखे. कोशिश करने पर भी जब कामयाबी नहीं होती तो यह उसका इम्तिहान है. इम्तिहान यह है कि देखा जाता है कि उसमें कितनी हिम्मत है, उसे अपने लक्ष्य से कितना प्यार है और उसके लिए वह कितनी क़ुर्बानी कर सकता है.

जितनी दुनियाँ की तक़लीफ़ें होती हैं और जितनी रुकावटें आती हैं और तुमसे दुनियाँ की चीज़ें छीनी जाती हैं, ये सब इम्तिहान हैं, तीसरे अगर ईश्वर से भी प्यार है और दुनियाँ से भी प्यार है तो तरक़्क़ी नहीं होती, वहीँ का वहीँ रहता है. इसलिए ईश्वर के प्यार के साथ दुनियाँ के साथ तर्क (त्याग) भी ज़रूरी है. गुरुजन, ईश्वर प्रेम और दया के सागर हैं. वे हर समय प्यार करते हैं. लेकिन हमें उसका अनुभव उसी वक्त होता है जब भक्त कोशिश करके अपने हृदय को दुनियाँ की ख्वाहिशात और नफ़रत से शुद्ध कर लेता है, इससे पहले नहीं. इसलिए घबराना नहीं चाहिए. बुद्धि, मन और इन्द्रियों का हर समय शोधन करते रहना चाहिए, यानी :-

1) हर समय ख्याल रखो कि ईश्वर तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारा सच्चा बाप है. प्यार से उसका पवित्र नाम लेते रहो.

2) जिस हालत में भी उसने तुम्हें रखा है, चाहे वो अच्छी है या बुरी, उसमें खुश रहो. दुःख और सुख की दुनियाँ से ऊपर उठो. जब तक ज़िंदगी है, दुःख और सुख तो आते ही रहेंगे. उनका आना ज़रूरी है, लेकिन अपने मन को उससे ऊंचा उठाओ और जो ख़िदमत या फ़र्ज़ ईश्वर ने तुमको सुपुर्द किया है उसे ईमानदारी और सच्चे दिल से पूरा करो. हर समय ख्याल रखो कि यह दुनियाँ ईश्वर की है. हम सब ईश्वर के हैं. जो काम हो रहा है और हम कर रहे हैं, ईश्वर के लिए कर रहे हैं. हम वहीँ से आये हैं, उसी की दुनियाँ में रह रहे हैं,और हमें वहीँ जाना है.

3) अपने ख्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ. ख्यालों पर क़ाबू पाने की कोशिश करो. अपनी बुद्धि को दुनियांवी ख्यालों से हटाकर सन्तोंकी वाणी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के प्रेम में लगाओ. इन्द्रियों का आचार ठीक करो. कोशिश करो कि इन्द्रियाँ दुनियांवी ग़िलाजत देखने के बजाय हर जगह ईश्वर को देखें. यही रहनी-सहनी का ठीक करना है.

4) जब-जब मौका मिले सन्तों, गुरुजनों की सेवा करो, उनको खुश करो, उनका सत्संग करो, उनके उपदेशों को हित- चित से सुनो और उन पर अमल करने की कोशिश करो. हमेशा पूरी कामयाबी होगी. कभी निराशा नहीं होगी.

यही सच्चा, सीधा और सहज रास्ता ईश्वर को प्राप्त करने का है.